पर्यावरण अध्ययन का एक अध्याय

''मंडी से घर तक'' पर शिक्षकों व बच्चों के साथ काम की झलक

कालू राम शर्मा

शिक्षकों की पेशेवर तैयारी के मद्देनजर मध्यप्रदेश में शैक्षिक संवाद का आयोजन किया जाता रहा है। इस मौके पर आदिवासी जिले खरगोन के गोगांवा जनशिक्षा केंद्र के शिक्षकों के साथ पर्यावरण अध्ययन पर बातचीत की गई। मध्यप्रदेश में जब से एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तकें लागू हुई है तब से हालिया समझ यह है कि पर्यावरण अध्ययन विषय का अध्यापन कक्षाओं में बाधक बना हुआ है क्योंकि इस विषय में बच्चों को प्रश्न-उत्तर जैसा लिखवाने को कुछ है ही नहीं।

मेरी योजना में यह भी शामिल था कि किसी सरकारी स्कूल के बच्चों के साथ भी उसी अवधारणा पर पर कार्य किया जाए जिस पर शिक्षकों के साथ काम किया गया है। इस योजना का मकसद बच्चों के साथ पाठ्यपुस्तक के अध्याय पर कैसे कार्य किया जा सकता है व वे किस प्रकार की प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं, यह समझना है। जिन बच्चों के साथ कार्य किया गया वे गोगांवा जन शिक्षा केंद्र के एक ग्रामीण स्कूल दयालपुरा के हैं।

शिक्षकों के साथ मंडी से घर तक पर बातचीत

पर्यावरण अध्ययन का नजरिया

शिक्षकों के साथ जो बातचीत हुई उसमें पर्यावरण अध्ययन के कुछ मसलों पर रोशनी डाली गई। मुझे लगता है कि शिक्षकों के साथ काम करते हुए नजरिए के मसलों को याद दिलाना या व्यक्त करना अपेक्षित होता है। ऐसी बातें बच्चों के साथ करने की जरूरत नहीं होती।

शुरुआत इस बात से की गई कि पर्यावरण अध्ययन का शिक्षण अपने परिवेश को शामिल करता है और बच्चों को करने, खोजने के अवसर देता है। पर्यावरण अध्ययन विशेषकर बच्चों में खोजी प्रवृति को बढ़ावा देने और हाथों से करके सीखने (प्रयोग, गतिविधियां आदि) से संबंध रखता है। कक्षा के बाहर की प्रवृतियां भी शिक्षण के अंग बननी चाहिए। बच्चे स्कूल में अनेक अनुभव व समझ लेकर आते हैं। इन अनुभवों को कक्षायी शिक्षण में शामिल करना अपेक्षित है।

पर्यावरण अध्ययन प्रकृति व समाज से जुड़ा विषय है। समग्र रूप से प्रकृति, समाज के मसलों व घटनाओं को आधार बनाकर विमर्श के मौके देने का विषय है। कक्षा की चहारदीवारी से बाहर निकलकर बच्चे प्रकृति व समाज में एक तय योजना के साथ जाएं व उनका अध्ययन करें।

प्रारंभिक कक्षाओं में कोशिश यह होनी चाहिए कि बच्चों के नज़रिए से अपने परिवेश की चीज़ों पर काम हो। बच्चे अपने 'आस-पास' की घटनाओं व चीज़ों को जिस नजरिए से देखते हैं उसे पोषित किया जाए व उसी को सीखने का आधार बनाया जाए।

पर्यावरण अध्ययन के नजरिए (पर्सपेक्टिव) पर अधिक शास्त्रार्थ न करते हुए एनसीईआरटी कक्षा चौथी के ''मंडी से घर'' तक नामक अध्याय पर विमर्श किया गया।

शिक्षकों के साथ पाठ्यपुस्तक पर कार्य की एक झलक

अध्याय की शुरुआत वैशाली नामक बच्ची के घर की कहानी से होती है। वैशाली के पिताजी सब्जी बेचते हैं। सब्जी बेचने के काम में घर के कौन-कौन सदस्य सहयोग करते हैं व उनकी दिनचर्या क्या होती है, यह बताया गया है।

पाठ्य (टैक्स्ट) के साथ ही एक सवाल दिया गया है।

क्या तुम्हारे घर में भी किसी को सुबह-बहुत जल्दी उठना पड़ता है? किस समय? किस काम के लिए?

इस सवाल पर हम ठहर गए कुछ वक्त के लिए। शिक्षकों से कहा गया कि आप अपने अनुभव बताइए। घर में सुबह जल्दी कौन उठता है? कब और किस काम के लिए?

शिक्षकों ने जो जवाब दिए वो इस प्रकार हैं :

- शिक्षिकाओं ने बताया कि सुबह-सुबह बच्चों को टिफिन बनाकर देना होता है।
- एक शिक्षक ने बताया कि उन्हें भैंस का दूध दुहना होता है इसलिए साढ़े पांच बजे उठना पड़ता है।
- योग करने के लिए सुबह जल्दी उठता हूं।
- खेत में जाना होता है।
- सुबह जल्दी उठना अच्छा लगता है।

वास्तव में हमारी दिनचर्या की शुरुआत में कितनी विविधता है यह इस सवाल के जरिए समझा जा सकता है। स्कूल में आने वाले बच्चों की पृष्ठभूमि को समझने में यह सवाल काफी अहम साबित हो सकता है। जिन बच्चों के साथ शिक्षण करते हैं उनकी घर की दुनिया कैसी होगी यह इस सवाल के जरिए समझा जा सकता है। हम जिस समाज में रहते हैं उसके क्रियाकलापों को समझना भी तो शिक्षा ही है।

इस तरह के खुले प्रश्न की खास बात यह है कि इनमें कोई भी जवाब गलत नहीं है। बच्चों को अभिव्यक्ति के अवसर अपने संदर्भ में मिलते हैं।

पर्यावरण अध्ययन में इस अध्याय को क्यों शामिल किया गया? एक शिक्षक ने पूछा। वास्तव में पर्यावरण अध्ययन के पाठ्यक्रम में उन तमाम चीजों को शामिल किया गया है जो बच्चों के संदर्भ में होती है। समाज क्या है, कैसे काम करता है, उसे परोक्ष रूप से चलाने में कौन लोग मदद करते हैं, भोजन, पानी, उत्सव और प्राकृतिक परिवेश जिसमें शामिल है- जंगल, पेड़-पौधे, जीव-जंतु, पानी, मिट्टी इत्यादि। ये सब पर्यावरण अध्ययन के पाठ्यक्रम का हिस्सा है।

पर्यावरण अध्ययन के संपूर्ण पाठ्यक्रम को छह थीमों में बांटा गया है- परिवार और मित्र, भोजन, पानी, आवास और हम चीजें कैसे बनाते हैं। अगर इन थीमों पर बने अध्यायों पर नजर डालें तो बच्चों को अधिक से अधिक अपने अनुभवों को साझा करने, खोजबीन करने को प्रेरित किया गया है। अध्याय के पाठ्य (टैक्स्ट) के बीच-बीच में भी सवाल दिए गए हैं जो बच्चों को अवलोकन करने, अनुभवों को व्यक्त करने, सोचने व आगे खोजबीन के लिए प्रेरित करते हैं। आमतौर पर हमारी शिक्षा व्यवस्था में सही-गलत की संस्कृति का बोलबाला है जहां बच्चे इस धारणा से ग्रसित होते दिखते हैं कि कहीं ''गलत तो नहीं बोल दिया या लिख दिया''। जब बच्चे अपने-अपने अनुभव प्रस्तुत करेंगे तो वहां ''सही-गलत'' का सवाल कहीं पीछे छूट जाता है। और एक उद्देश्य इन प्रश्नों का यह भी है।

सब्जी बेचने वाले की दिनचर्या

इस चर्चा के बाद अगला पाठ्य (टैक्स्ट) पढ़ा गया। वैशाली के बाबूजी सुबह जल्दी घर से निकल पड़ते हैं मंडी के लिए जहां से सब्जी खरीदते हैं। वैशाली का भाई छोटू, अम्मा और वह खुद पिछले दिनों की बची सब्जियों को बोरियों में भरकर पानी छिड़कते हैं...।

मैंने उनसे कहा कि आप सोच सकते हैं कि वैशाली का घर कैसा होगा? क्या आपके, हमारे घर जैसा होगा? इन्हीं हालातों में वैशाली और उसका भाई स्कूल भी जाते हैं। क्या हमारे घरों, परिवारों के बच्चे घर के कामों में हाथ बंटाते हैं? बात यह सामने आई कि मध्यमवर्गीय परिवारों के बच्चों के लिए काम करने को होता नहीं है। जबकि कामकाजी समाज में बच्चों को भी काम करना पड़ता है। मैंने यहां उस बात की तरफ चर्चा को मोड़ा जहां हम सरकारी स्कूलों में आने वाले बच्चों के बारे में कहते रहते हैं कि बच्चे घरों में काम करते हैं। इसके चलते वे घर पर पढ़ नहीं पाते या होमवर्क नहीं कर पाते। क्या वैशाली जैसे बच्चे आपके स्कूल में हैं? सवाल ही काफी था। वास्तव में यही फर्क है मुख्यधारा के समाज व हाशियाकृत समाज के बीच और इस फर्क को समझना होगा।

आगे पढ़ना जारी रखा। सब्जी बेचने को लेकर सब्जी वाला रणनीति बनाता है। पिछले दिन की बची हुई सब्जी को पहले बेचा जाता है। यह दिलचस्प मामला लगा हम सभी को।

इस पाठ्य (टैक्स्ट) के बाद कुछ प्रश्न थे जिन पर सार्थक चर्चा हो सकी।

वैशाली के बाबूजी पिछले दिन की सब्जियां पहले बेचने की कोशिश करते हैं। वे ऐसा क्यों करते होंगे?

सवाल आसान मगर दिलचस्प लगा। लगभग एक से ही जवाब आएः पिछले दिन की सब्जी खराब हो जाएगी। सब्जी वाले का नुकसान हो जाएगा।

यहां एक प्रतिप्रश्न किया गया कि कौनसी सब्जियां? क्या वह आलू, प्याज को भी पहले बेचेगा? नहीं, आलू-प्याज जल्दी खराब होने वाली सब्जियों में से नहीं है।

अगला प्रश्न हैः क्या तुमने कभी सूखी या सड़ी-गली सब्जी देखी है? कहां?

इस पर सभी शिक्षकों के पास अपने-अपने अनुभव थे। उनमें से कुछ ने कहा कि फ्रीज में भी पड़ी-पड़ी सब्जियां खराब हो जाती है। एक ने कहा कि मंडी में खराब होकर सड़ती रहती है। एक ने कहा कि जब सब्जियों के भाव गिरते हैं तो खेतों में ही सड़ जाती है। आलू-टमाटर की सब्जियों के भाव नहीं आते तो किसान खेत में ही सब्जियों को सड़ा डालता है। एक ने बताया कि बड़ी-बड़ी होटलों में सब्जियां खराब होती रहती है और वे उसी को बनाकर खिलाते हैं।

इस सवाल के जरिए किसानों के शोषण की पोल खुलती है। लिहाजा यह चर्चा शिक्षकों के साथ हुई कि इस तरह के मुद्दों को कक्षा में प्रकट होना चाहिए। यह पाठ्यपुस्तक की तासीर की खूबी है जो इस तरह के मसलों को उठाने की कवायद करती है।

इसी कड़ी में तीसरा सवाल काफी सरल मगर सोचकर जवाब देने को प्रेरित करता हैः तुम्हें कैसे पता चलता है कि सब्जी खराब हो गई है?

शिक्षकों ने बताया कि : बदबू आने लगती है। पिलपिली हो जाती है। मुरझा जाती है।

शिक्षकों से पूछा गया : आपको क्या लगता है जिन बच्चों से आप ये प्रश्न पूछेंगे उनके जवाब किस प्रकार के होंगे?

आप सोच सकते हैं कि इस तरह के सवालों को अध्याय के बीच-बीच में क्यों शामिल किया गया होगा? वजह साफ है कि बच्चे केवल श्रोता भर नहीं बल्कि उन्हें अधिक से अधिक इन प्रसंगों में सक्रिय भागीदारी करने के मौके मिलें।

क्या इस दौरान बच्चों को अभिव्यक्ति के अवसर मिल पा रहे हैं या नहीं? क्या इस दौरान पाठ के पाठ्य (टैक्स्ट) को पढ़ा जा रहा है वह पढ़ने की श्रेणी में आता है या नहीं? क्या इस दौरान बच्चे जो कुछ अपनी कॉपी में लिखेंगे वह उनकी लिखने की क्षमता में इजाफा करेगा?

दरअसल, हम पाठ्यपुस्तक के अध्याय पर कार्य करते हुए यह समझने की कोशिश कर रहे थे कि पाठ्यपुस्तक पर काम कैसे किया जाए। और जो सवाल मामूली से लगते हैं वे बच्चों को कैसे सोचने-समझने की दुनिया में ले जाते हैं। जहां वे अपने तर्क को पैना कर सकें। ये सवाल बच्चों को अपनी अभिव्यक्ति के अवसर देते हैं।

उल्लेखनीय है कि एनसीईआरटी द्वारा तैयार की गई पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तकों की रचना कुछ इस तरह से की गई है कि वे बच्चों को सोचने-समझने व करने तथा अपने विचारों को प्रतिबिंबित करने के अवसर अधिक से अधिक दें। यशपाल समिति की अनुशंसा यहां काफी हद तक क्रियान्वित होती दिखती है। जहां बच्चों के संज्ञानात्मक स्तर को ध्यान में रखते हुए उन्हें अपने संदर्भ से जोड़ते हुए अपने विचारों को व्यक्त करने के मौके मिलें। इसी बात को ध्यान में रखते हुए अध्याय में बीच-बीच में प्रश्न हैं। प्रश्न भी ऐसे हैं कि बच्चे उन्हें समझते हुए अपने संदर्भ के आधार पर अपनी राय रख सकें। इसके अलावा इन पाठ्यपुस्तकों में विज्ञान व समाजशास्त्र, गणित के तत्व गहराई से वैसे ही घुले-मिले हैं जैसे कि हमारे जीवन में।

हमारी दुनिया में समय, दूरी इत्यादि का मापन भी समाया हुआ है। बिना गणित के कल्पना नहीं की जा सकती। इसी प्रकार की एक गतिविधि पेज 122 पर दी गई है। यहां घड़ी के तीन चित्र दिए गए हैं व इनके साथ ही वैशाली के रोजमर्रा के क्रियाकलापों के वक्त को नोट करना है। बच्चों से भी अपेक्षा की गई कि वे भी बताएं कि घड़ी में बताए समय पर वे खुद क्या करते हैं।

वैशाली, उसका छोटा भाई और तमाम बच्चे रात में जल्द ही सो जाते होंगे। लेकिन मेहनतकश लोग तो देर से ही सोते हैं। और तीन बजे वैशाली के पिताजी उठ खड़े होते हैं।

प्रश्न मार्मिक है। मैंने उनसे पूछा कि आप लोग सुबह तीन बजे क्या करते हैं? सभी का जवाब था : हम सभी सो रहे होते हैं। उनके अनुभव में क्या यह है कि कौन लोग हैं जो तीन बजे उठते होंगे? इसी प्रकार से सुबह छह बजे व रात के दस बजे आप क्या करते हैं। जवाब दिलचस्प आए। कुछ पुरुष शिक्षकों ने कहा कि वे सो रहे होते हैं। और रात दस बजे को लेकर अधिकांश शिक्षकों ने बताया कि वे टीवी देख रहे होते हैं।

क्या ये सवाल बच्चों के लिए उपयुक्त हैं? क्या वे इन प्रश्नों पर अपनी राय रख पाएंगे? शिक्षकों को एहसास हो रहा था कि बच्चों के अपने-अपने जवाब होंगे। यहां थोड़ा ठहरकर प्रश्नों की प्रकृति पर बातचीत की गई। क्या इन प्रश्नों में सही-गलत का मामला बनता है? हर सवाल एक खुले जवाब की अपेक्षा करता है। इस बात को समझना होगा। इस प्रकार का शिक्षण बच्चों में आत्मविश्वास पैदा करता है।

अगला प्रश्न जो पूछा गया : तुम्हारे घर में सब्जियां कहां से आती है? उन्हें कौन लाता है?

मामूली से प्रश्न के जरिए जेंडर का मामला उजागर होता है। पुरुष शिक्षकों ने कहा कि वे खुद बाजार से लाते हैं। सब्जी लाने का काम अमूमन पुरुषों का और बनाने का महिलाओं का। एक शिक्षक जो कि ठेठ गांव के थे, उन्होंने बताया कि उनके गांव में कोई दुकान नहीं है। खेत से शाम को आते वक्त लेकर आते हैं।

हम भिंडी की सब्जी खाते हैं। इसके लिए भिंडी को काटा जाता है। भिंडी की सब्जी बनाने के लिए भिंडी को या तो आड़ा काटा जाता है या खड़ा। इससे हम सभी वाकिफ हैं। अगर भिंडी को आड़ी काटें तो कितने कक्ष दिखाई देते हैं? केवल एक शिक्षक ने बताया कि पांच कक्ष होते हैं। और खीरे की आड़ी कटान में? शिक्षकों ने कभी ध्यान से नहीं देखा था। सो, वे कह उठे कि अब ध्यान से देखने की कोशिश करेंगे।

एक शिक्षक ने सवाल किया कि इन सब चर्चाओं का दैनिक जीवन में क्या उपयोग है? वास्तव में आप भिंडी-खीरे की कटानों को न देखें तो भी हमारी सेहत पर कोई फर्क पड़ने वाला नहीं। हम चीज़ों को बारीकी से देखने, खोजबीन करने के मौके तलाशना चाहते हैं। अलग-अलग सब्जियों व फलों की कटानों में बीजों की जमावट के पैटर्न पर अच्छा खासा कार्य कर सकते हैं। यही आगे चलकर वनस्पति विज्ञान की बुनियाद बनता है। (यहां कुछ सब्जियों व फलों की कटानों में दिलचस्प पैटर्न देख सकते हैं।)

बच्चों को चिंतन-मनन के मौके हम अपने संदर्भों में कैसे दे सकते हैं इस प्रकार का कार्य हमें इस अध्याय में आगे और देखने को मिला।

आगे सब्जियों व फलों की एक सूची दी गई है। इसमें से कौन जल्दी खराब हो सकती हैं और कौन कुछ दिनों तक रखी जा सकती है। लगने को यह गतिविधि आसान सी है। मैंने यहां रुक कर ठीक से चर्चा करना चाहा।

सूची इस प्रकार है : पालक, आलू, केला, टमाटर, नाशपती, चीकू, अनानास, लौकी, प्याज, फूलगोभी, खीरा, अंगूर, अदरक।

अब शिक्षकों के बीच बहस प्रारंभ हो चुकी थी। ''खराब होने से क्या मतलब है?'' इस पर समझ बनाई गई। खराब होने का मतलब सड़ जाना, नरम पड़ जाना, बदबू आना, पिलपिली हो जाना आदि।

अब थोड़ा आसान हुआ वर्गीकरण करना।

पालक, केला, टमाटर, चीकू, फूलगोभी, अंगूर ऐसी सब्जियां व फल हैं जो बनिस्बत जल्दी खराब हो जाते हैं। जबकि आलू, नाशपाती, अनानास, लौकी, प्याज अदरक कुछ दिनों तक रखी जा सकती है। हालांकि यहां लौकी को लेकर विशेषतौर पर प्रतिक्रिया दी गई कि लौकी की बनिस्बत आलू, अदरक आदि अधिक दिनों तक रखे जा सकते हैं। इस आसान से वर्गीकरण के जरिए हम सब्जियों व फलों के गुण को समझ सके।

अगली गतिविधि में अवलोकन के एक और पहलू जो कि छूने से संबंधित था को जोड़ा गया। बच्चों के अनुभवों को शामिल किया गया कि कौनसी सब्जियां छूने पर चिकनी व कौनसी खुरदरी लगती है।

आलू पर सार्थक बहस हुई। आलू को एक शिक्षक मान रहे थे कि चिकना है जबकि अन्य उसे खुरदरा मान रहे थे।

असल में इस तरह के फंसाव के मौके बच्चों के बीच आने चाहिए। खुद से निर्णय करने का यह यह बढ़िया उदाहरण है। पहले शिक्षक का तर्क था कि आलू की छाल पर न तो रोंए हैं न ही उसमें कोई खुरदुरापन, छिलका चिकना होता है। दूसरे शिक्षक का कहना था कि आलू में खूब सारे गड्डे होते हैं जो उसको खुरदुरा बनाते हैं।

दोनों के तर्क भारी पड़ रहे थे। जहां बच्चों को रटना, याद करना व मात्र सुनना हो वहां समस्या के समाधान करने की गुंजाइश कम ही होती है। वर्तमान एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तक में ऐसे कितने ही अवसर दिए गए हैं जहां बच्चों के बीच द्वंद की स्थिति पैदा होती है और वे खुद उसका हल कर सकें। अगर हल न भी हो तो भी इस तरह के मसलों को बच्चों के बीच रखा तो जाना ही चाहिए।

शासकीय प्राथमिक विद्यालय दयालपुरा के बच्चों के साथ कार्य

मैंने गोगांवा विकास खंड के प्राथमिक स्कूल दयालपुरा में पर्यावरण अध्ययन पर बच्चों से बातचीत की। इसके एक दिन पहले गोगांवा जन शिक्षा केंद्र पर शिक्षकों के साथ 'मंडी से घर तक' पाठ पर बातचीत की थी।

मैं यह समझना चाह रहा था कि बच्चों के साथ इस थीम पर कैसे बातचीत की जा सकती है। बच्चों की इस थीम पर काम करने के दौरान क्या सीख होती है। वे इस पूरी अवधारणा पर क्या समझ रखते हैं।

लिहाजा मैंने अध्याय पर काम पाठ्यपुस्तक के दायरे में ही किया।

कक्षा चौथी में उस दिन 8 बच्चे थे। मैंने शुरुआत की कि मंडी का क्या मतलब है? इस पर बच्चों ने बताया कि मंडी में चीजें बेची जाती है। सब्जी, अनाज मंडी में गांव के लोग बेचने को जाते हैं।

फिर क्या होता है उसका? बच्चों ने बताया कि फिर इनको और लोग खरीदते हैं। मंडी और बाज़ार में क्या फर्क है? यह फर्क बच्चे नहीं बता पाए। उनसे पूछा कि बाजार तो तुमने देखा है, गए भी होंगे। बाजार में क्या-क्या होता है?

बच्चों ने बताया कि बाजार में चीजें बिकती है। उन्हें लोग-बाग घर में इस्तेमाल के लिए खरीदते हैं।

मैंने जोड़ा : मंडी में लोग थोक में अनाज, सब्जी, फल बेचते हैं और फिर उनको बेचने वाले खरीदकर बाजार में बेचते हैं।

पाठ्यपुस्तक में बीच-बीच में सवाल दिए गए हैं जिन पर बच्चों से बातचीत की।

कौन-कौन तुम्हारे घरों में जल्दी उठता है? इसका जवाब हर बच्चे ने दिया। मां-पिताजी उठने के बाद हम उठते हैं। बच्चों ने बताया कि सभी बच्चों के घरों में मां पहले उठती है।

बाबूजी पिछले दिन की सब्जियां पहले बेचने की कोशिश करते हैं। वे ऐसा क्यों करते हैं?

क्या तुमने सूखी या सड़ी-गली सब्जी देखी है? कहां?

तुम्हें कैसे पता चलता है कि सब्जी खराब हो गई है?

उपरोक्त तीनों सवालों पर नजर डालिए। ये वे सवाल हैं जो बच्चों में घबराहट व भय के बजाय उन्हें सोचने को प्रेरित करते हैं। जो बच्चों की अस्मिता को तव्वजो देते हैं। इन सवालों के जवाब देते वक्त बच्चा अपने आपको गौरवांवित महसूस किए बिना नहीं रह सकता। जो जवाब बच्चों ने दिए उन्हें उनकी जबानी देखा जा सकता है।

बच्चों ने जो लिखा उसका आकलन उनके स्तर के अनुसार ही करने की जरूरत है जहां लिखने के दौरान की जाने वाली गलतियों पर अभी बातचीत करने का सही वक्त नहीं है। बल्कि विचार के स्तर पर बच्चे क्या लिखते हैं उसका भावात्मक विश्लेषण करने का वक्त है। यहीं से बच्चों में आत्मविश्वास की नींव पक्की होनी शुरू होती है जिस पर

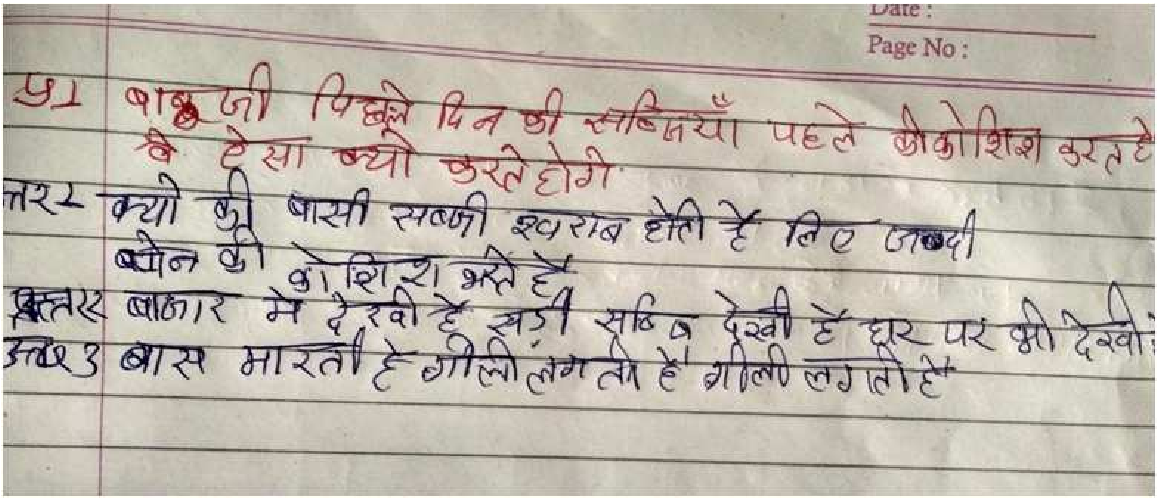
Date :
Page No :
प्र1 बाबूजी पिछले दिन की सब्जियाँ पहले कीकोशिश करते है वे ऐसा क्यो करते होगे
उत्तर1 क्यो की बासी सब्जी खराब होती है लिए जल्दी बेचन की कोशिश करते है
उत्तर2 बाजार मे देखी है सड़ी सब्जि देखी है घर पर भी देखी
उत्तर3 बास मारती है गीली लगती है गीली लगती है

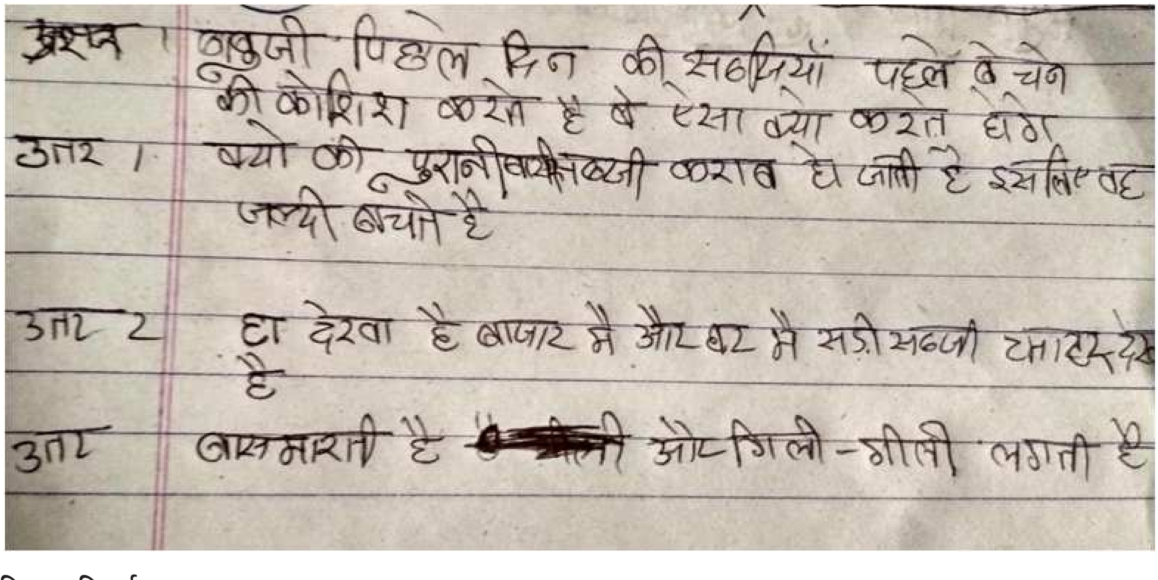
प्रश्न। बाबुजी पिछल दिन की सब्जियां पहले बेचने की कोशिश करते है वे ऐसा क्या करते होगे
उत्तर। क्यो की पुरानी सब्जी खराब हो जाती है इसलिए वह जल्दी बचाते है
उत्तर 2 हा देखा है बाजार मे और घर मे सड़ी सब्जी देखी है
उत्तर बासमारती है और गिली-गीली लगती है

''लाल गोले'' या ''क्रास'' का निशान लगाकर नेस्तनाबूत करने से बचना होगा। बच्चों के इस तरह लिखकर अभिव्यक्त करने का आत्मविश्वास उन्हें इस हुनर में उस्ताद बना सकता है।

इन सवालों के जवाब लिखते वक्त बच्चों का मैं अवलोकन कर रहा था। बच्चों में मायूसी के बदले लिखने पर विजय पाने का संघर्ष था। जो दिमाग में चल रहा है उसे बेबाकी से लिखने की कोशिश में बच्चे लगे हुए थे। हर बच्चे ने लिखा यह कम दिलचस्प नहीं है।

बच्चों को यह बात दिलचस्प लगी वे अचरज कर रहे थे कि सब्जी बेचने वाले रात को ग्यारह-साढ़े ग्यारह बजे तक सोते हैं।

बच्चे घड़ी में दिखाए गए समय को ठीक से नहीं पढ़ पा रहे थे। मैंने थोड़ी मदद की। पहली घड़ी में तीन बज रहे हैं। दूसरी घड़ी में छह बजे हैं और तीसरी में दस बजे हैं। दरअसल, यह अभ्यास पिछले पढ़े हुए के आधार पर जवाब की मांग करता है। इसमें वैशाली क्या कर रही है यह बच्चों से पूछा गया। फिर से पिछले पाठ को पढ़ने की जरूरत हुई।

बच्चों ने सही-सही तो नहीं बताया कि वे कब उठते हैं। सभी यही बता पा रहे थे कि सुबह जल्दी उठते हैं।

अगले सवाल पर बात की गई : तुम्हारे घर में सब्जियां कहां से आती है? कौन लाता है?

दयालपुरा स्कूल के बच्चे गांव में रहते हैं। कुछ ने बताया कि उनके घर में खेत से सब्जी लाते हैं। एक बच्ची ने बताया कि उसके घर के पिछवाड़े में सब्जी की बेल है। कुछ बच्चों ने बताया कि हाट से उनके पिताजी लाते हैं।

अगला सवाल बच्चों को खुली सोच का मौका देता है। कुछ सब्जियों और फलों के नाम दिए गए हैं। अब बच्चों को तय करना है कि कौन जल्दी खराब होगा। बच्चों से कहा गया है कि वे और नाम भी इसमें शामिल कर सकते हैं।

इसके लिए बच्चों को थोड़ी देर के लिए चर्चा करके लिखने के लिए छोड़ दिया गया। बच्चों ने इस पर अपनी समझ के मुताबिक लिखा।

अधिकांश सब्जी व फलों को लेकर आम सहमति दिखाई दी। एक बच्चे ने जो वर्गीकरण किया उसे उसी के शब्दों में यहां देखा जा सकता है।

अगला सवाल काफी आसान मगर दिलचस्प है। उपरोक्त सब्जियों व फलों में से कौन खुरदरी व कौन चिकनी हैं?

बच्चे सोच रहे थे। लग रहा था जैसे उनकी आंखों के सामने उन सब्जियों व फलों के चित्र नाच रहे थे। लगभग सभी सब्जियां व फल उनके संदर्भ के उन्होंने इस्तेमाल किए थे।

जब हम बच्चों को सीखने-समझने के मौके देते हैं तो इस प्रक्रिया में वक्त लगता है। इसके लिए शिक्षक को धैर्य से काम लेना होता है। कक्षा में जब सामूहिक चर्चा होती है तो उसमें असहमतियों को भी स्थान देना होता है। बात आलू को लेकर अटक गई। एक बच्चे ने कहा कि आलू तो खुरदरा होता है। जब मैने शिक्षकों के साथ इसी मसले पर कार्य किया था तब भी आलू पर आकर चर्चा अटक गई थी।

उस बच्चे का तर्क था कि आलू में कुछ गड्डे जैसे होते हैं। इसलिए आलू को खुरदरे में रखेंगे। जब आलू को खुरदरा

कहा गया तो बात दूर तलक गई। एक बच्ची ने कहा कि फिर तो पालक भी खुरदरा है। मैंने पूछा कैसे? इस पर उसने अपने शब्दों में बताया कि पालक की पत्ती में लकीर होती है। लकीर का अर्थ? लकीर मतलब लकीर! बात फंस गई। मैंने कहा कि पालक की पत्ती तो चपटी होती है। उसमें लकीर कहां होती है। पत्ती पर बीच में एक बड़ी लकीर होती है। फिर उसमें से छोटी लकीर पत्ती पर होती है। मैं समझ चुका था। बच्ची पालक की पत्तियों में नसों या कि शिराओं की बात कर रही है जो पत्ती में उभरी होती है। अगर बच्चों को आलू की आंख की वजह से व पालक में नसों की वजह से खुरदरेपन का अहसास होता है तो हर्ज तो नहीं होना चाहिए। फिर एक बच्ची ने खीरे याने कि ककड़ी को खुरदरा कहा। मैंने पूछा कैसे? उसने बताया कि ककड़ी में कांटे-कांटे होते हैं। उसने आगे कहा कि गर्मी में ककड़ी आती है उस पर खड़ी धारियां होती है। इसलिए ये भी खुरदरी है।

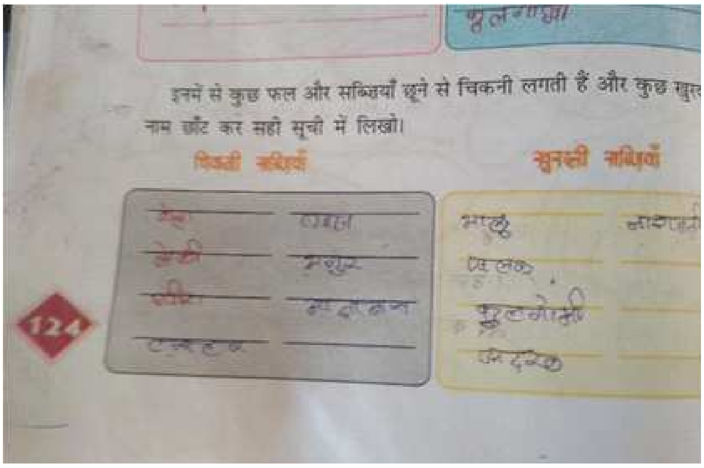

बहरहाल, बच्चों के अपने अनुभव थे जहां सही-गलत का मामला नहीं बनता है। बच्चों के चेहरों पर आत्मविश्वास कुलांचे भर रहा था।

अगला सवाल फिर से अपने अनुभवों को साझा करने पर आधारित था। ऐसी सब्जी जो सबसे भारी लगे उसका चित्र बनाने को कहा गया था।

सभी बच्चों ने कद्दू का नाम बताया।

अगला प्रश्न ऐसी सब्जियों के नाम बताने को लेकर था जिनमें बीज नहीं होते। इस सवाल में बच्चों को कोई दिक्कत नहीं आई। बच्चों ने पालक, आलू, गोभी वगैरह बताए।

मैं सोच रहा था कि इस स्तर पर पाठ्यपुस्तक लेखकों ने सब्जी और फल में फर्क सामाजिक आधार पर ही प्रस्तुत किया गया है। जो सब्जियों के रूप में खाई जाती है और जो फल के रूप में। वाकई में टमाटर, केला, सेवफल, भिंडी, कद्दू, खीरा वगैरह वनस्पति शास्त्र के दायरे में फल की श्रेणी में आते हैं। लेकिन यहां जो वर्गीकरण है वह सब्जी के रूप में भोजन के साथ पकाकर या कच्चा खाने से है और फल जो कि भोजन के अलावा खाए जाते हैं। क्योंकि सब्जी की श्रेणी में आलू, गाजर, पालक, मेथी इत्यादि शामिल है।

पेज 123 पर बच्चों को एक गतिविधि करने को कहा है। मैंने बच्चों का ध्यान इस ओर खींचा। अगर भिंडी की लंबाई को मापना हो

तो कैसे मापेंगे? बच्चों ने सीधा जवाब दिया स्केल से। हालांकि इस जवाब में कोई समस्या नहीं है। लेकिन मुझे लगा कि यहां बच्चों को एक अतिरिक्त इशारा करना होगा। स्कूल के मध्याह्न भोजन की रसोई से गाजर, मिर्ची व टमाटर बुलाए गए। मिर्ची व गाजर की लंबाई नापने पर बातचीत की गई। मैंने बच्चों के सामने समस्या रखी कि गाजर, मिर्ची पेंसिल की तरह सीधी-सपाट नहीं होतीं। मैंने गाजर हाथ में उठाकर उसे बच्चों को दिखाया। वाकई में गाजर व मिर्ची में टेढ़ापन था। तो टेढ़ी-मेढ़ी आकृति की लंबाई मापने के लिए क्या किया जाना चाहिए?

बच्चों के पास इसका जवाब नहीं था। मैंने बताना उचित समझा। मैंने कहा कि एक धागा चाहिए। कक्षा में धागा नहीं था। धागे के विकल्प के रूप में फाइल का लेस जो एक मोटे धागे-सा था लिया। फाइल के लेस के जरिए बच्चों के सामने प्रदर्शन किया गया कि पहले धागे को गाजर के सहारे सटाकर रखकर उतने धागे को स्केल से माप लिया जाए। मैंने उन्हें बताया कि किसी भी आड़ी-टेढ़ी चीज की लंबाई इसी तरह से धागे की मदद से नापी जाती है।

पुस्तक में एक तालिका दी गई है जिसमें फलों व सब्जियों के बारे में जानकारी जुटाकर भरना है।

बच्चों ने सेवफल खाया तो था मगर उसका भाव नहीं पता था। इसलिए सेवफल का दाम क्या है यह उन्हें पता करने को कहा। एक बच्चे ने मुझसे पूछा कि आप बता दीजिए। मैंने उसे बताया कि पिछले दिनों मैंने 120 रुपए किलो सेवफल खरीदा था।

केले का दाम बच्चों को पता था जो दस रुपए से लगाकर 20 रुपए किलो तक बताया गया। बच्चों ने पपीता, जामफल (अमरूद) व चीकू के नाम जुड़वाए।

कुल मिलाकर मुझे एहसास हुआ कि अगर बच्चों की अपने संदर्भ की चीज़ों को आधार बनाकर विमर्श किया जाए तो उनमें सोचने-समझने का हुनर विकसित होता है। बच्चों के अनुभवों को और विस्तार देने के लिए भी कुछ सुराग मिल चुके थे। उम्मीद की जानी चाहिए कि बच्चे अब सब्जियों के भाव व उनके और गुणों के बारे में समझेंगे व खोजेंगे।

उपसंहार में एक बार फिर से पाठ्यपुस्तक के बारे में कुछ बातें। पर्यावरण अध्ययन की ये पाठ्यपुस्तकें खुलापन लिए हुए है। बच्चों को खुलेपन के साथ करने, सोचने का मौका देती हैं। ये बच्चों को उस कथित कक्षाई जकड़न व नीरसता से परे वहां ले जाती हैं जहां बच्चे खुशहाली की छांव तले सुकून के साथ सीख सकते हैं।

बच्चों के साथ काम करने के दौरान यह समझ और गहरी हुई कि उनमें सोचने, करने व खोजबीन का गुण होता है जिसे खुलेपन, उनके संदर्भ व उनको इनके अवसर देकर पोषित किया जा सकता है। ◆

लेखक परिचय : पिछले पच्चीस सालों से विज्ञान शिक्षण, पर्यावरण अध्ययन, शिक्षा और समाज के विषयों पर निरंतर लेखन। एकलव्य के होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम में लगभग 18 वर्ष तक संलग्न रहे। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, खरगोन (मध्यप्रदेश) में कार्यरत हैं।

संपर्क : 8226000428; **ईमेल :** kr.sharma@azimpremjifoundation.org